

Padma Shri



DR. AWADH KISHORE JADIA

Dr. Awadh Kishore Jadia is a Government Ayurvedic Medical. He is a well known Scholar, writer and a Poet. He is recognized as the representative Poet of Bundelkhandi dialect and honoured as a "Bundeli Gaurav". His five books of Rajbhasa, Braj and Bundeli dialects have been published till now.

2. Born on 7th September, 1949, in a small town named Harpalpur in Chhatarpur district of Madhya Pradesh in a "Rajvaidhya Family", Dr. Jadia completed B.A.M.S in 1970 from Jiwaji University, Gwalior with 'Gold Medal'. Later, he was appointed as the Medical Officer in Madhya Pradesh. During this period, he got great affection towards literature and writing. His first achievement is the honour of 'Udiyaman Manas Mani' from Gwalior in 1968.

3. Dr. Jadia makes great effort to refine Bundeli dialect to recognise and to popularize it in the field of Literature. In his writing, he uses Figure of Speech, Classical Language in his own manner to make his writing more appealing. He is recognized as a representative poet of Bundeli Bhasa at present. He is a member of the Selection Committee of 'Bundeli Utsav' Basari, Chhatarpur, Madhya Pradesh. He was a member of Valuar Committee in Uttar Pradesh Hindi Sansthan, Lucknow from 2013 to 2015. His four Bundeli rhymes are the part of M.A. syllabus of Maharaja Chhatrasal University, Chhatarpur, Madhya Pradesh.

4. Dr. Jadia is the recipient of numerous awards and honours in the field of Literature. He was awarded "Sahityalankar" from Kalaa Sanskrati Sahitya Peeth, Mathura, Uttar Pradesh in 1979, for his first Publication "Vandniya Bundelkhand"; "Bundeli Gaurav" from Akhil Bharatiya Braj Sahitya Sankay, Agra in 1991; "Kavi Shiromani" from Akhil Bhartiya Braj Sahitya Sangam, Mathura in 1994 and "Kavya Ratna" from Sahityanand Parishad Gola Gokarnath in 1997. His another great achievement is "Lok Bhusan Samman" in the year 2012 from Uttar Pradesh Hindi Sansthan, Lucknow.

पद्म श्री



डॉ. अवध किशोर जड़िया

डॉ. अवध किशोर जड़िया एक सरकारी आयुर्वेदिक चिकित्सक हैं। वह एक प्रसिद्ध विद्वान, लेखक और कवि हैं। उन्हें बुंदेलखंडी बोली का प्रतिनिधि कवि माना जाता है और "बुंदेली गौरव" कहा जाता है। राजभाषा, ब्रज और बुंदेली बोली में अब तक उनकी पांच पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

2. 07 सितंबर, 1949 को मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले के हरपालपुर नामक एक छोटे से कस्बे में एक "राजवैद्य परिवार" में जन्में, डॉ. जड़िया ने 1970 में जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर से 'स्वर्ण पदक' के साथ बी.ए.एम.एस. किया। बाद में, उन्हें मध्य प्रदेश में चिकित्सा अधिकारी नियुक्त किया गया। इस दौरान, उन्हें साहित्य और लेखन के प्रति बहुत लगाव हो गया। 1968 में ग्वालियर में 'उदीयमान मानस मणि' सम्मान उनकी पहली उपलब्धि थी।

3. डॉ. जड़िया बुंदेली बोली को परिष्कृत करने, उसे पहचान दिलाने और साहित्य के क्षेत्र में उसे लोकप्रिय बनाने के लिए प्रयासरत हैं। अपने लेखन को और अधिक रोचक बनाने के लिए वह, अपने तरीके से अलंकारों और शास्त्रीय भाषा का प्रयोग करते हैं। उन्हें इस समय में बुंदेली भाषा का एक प्रतिनिधि कवि माना जाता है। वह 'बुंदेली उत्सव' बसरी, छतरपुर, मध्य प्रदेश की चयन समिति के सदस्य हैं। वह 2013 से 2015 तक उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ में वेलुअर समिति के सदस्य रहे। उनकी चार बुंदेली कविताएं महाराजा छत्रसाल विश्वविद्यालय, छतरपुर, मध्य प्रदेश के एमए पाठ्यक्रम का हिस्सा हैं।

4. डॉ. जड़िया को साहित्य के क्षेत्र में कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उनके पहले प्रकाशन "वंदनीय बुंदेलखंड" के लिए उन्हें 1979 में कला संस्कृति साहित्य पीठ, मथुरा, उत्तर प्रदेश से "साहित्यालंकार"; 1991 में अखिल भारतीय ब्रज साहित्य संकाय, आगरा से "बुंदेली गौरव"; 1994 में अखिल भारतीय ब्रज साहित्य संगम, मथुरा से "कवि शिरोमणि" और 1997 में साहित्यानंद परिषद गोला गोकर्नाथ से "काव्य रत्न" सम्मान प्राप्त हुए। वर्ष 2012 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ ने उन्हें "लोक भूषण सम्मान" प्रदान किया गया, जो एक और बड़ी उपलब्धि है।